ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292,REG.No.:561/2013-14 Vol.-I, No.-1, PP-29-32, YEAR 2013

पर्यावरण प्रदूषण एवं मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव

❑ डॉ0 भोलेन्द्र प्रताप सिंह

मानव एवं पर्यावरण का पारस्परिक अटूट सम्बन्ध है जो मानव उद्‌विकास के समय से चलता आ रहा है। इसके साथ ही साथ धरातल तथा उसके समीपस्थ विद्यमान उन समस्त तत्वों, तथ्यों, एवं परिघटनाओं का कियात्मक सम्बन्ध है। इस प्रकार पर्यावरण, धरातल तथा उसके समीपस्थ मानव सहित उन सभी प्राकृतिक तत्व यथा–भूमि, मिट्टी, खनिज पदार्थ, जल एवं जलवायविक तत्वों, वनस्पतियों एवं वन्य जीवों, जन्तु एवं प्राणी वर्गों, मानवीय तत्वों तथा भूदृ यों का समुच्चयिक एवं पारस्परिक क्रियात्मक सम्बन्ध है। उक्त तत्वों में मनुश्य एक प्रमुख बौद्धिक तत्व एवं प्राणी है जो अपनी कु ालता एवं बौद्धिकता से उन सभी प्राकृतिक तत्वों के साथ अन्तर्क्रिया करके उनके रंग, रूप, स्वरूप एवं गुण इत्यादि में परिवर्तन एवं सम्बर्धन करके उनका उपभोग एवं विविध प्रकार के भूदृ यों (प्राथमिक एवं गैर–प्राथमिक आर्थिक क्रियात्मक) का निर्माण करता रहता है। जब मानव अपनी स्वार्थपूर्ण नीतियों एवं भावनाओं से प्राकृतिक तत्वों/खनिजों का विदोहन एवं उपयोग अन्धाधुन्ध करता रहता हैं।

गंगा एवं उसकी सहायक नदियों– हिमालय से निकलने वाली यमुना, गोमती, घाघरा, गण्डक, कोसी तथा पठारी क्षेत्र से निकलने वाली चम्बल, बेतवा, सोन आदि के जलोढ़ मिट्‌टी से निर्मित मैदानी क्षेत्र जो भारत के प्राकृतिक प्रदे ों में अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा भारत का सबसे घना बसा भू–क्षेत्र है। ग्रामीण और नगरीय अधिवासों का सबसे बड़ा जमघट यहाँ देखने को मिलता है क्योंकि कृशि और उद्योग के साथ–साथ यहाँ आर्थिक क्रियाकलाप अति विकसित अवस्था में है। इस प्रदे ा को प्रकृति का सबसे अधिक वरदान प्राप्त है तथा यहाँ कई हजार से मानव कियाकलाप का सिलसिला बना हुआ है। आवागमन की सर्वाधिक सुविधा के कारण सम्पूर्ण मैदान एक सांस्कृतिक इकाई बन गया है तथा भारत के सम्पूर्ण ऐतिहासिक जीवन में यह सांस्कृतिक क्रिया–कलापों का केन्द्र रहा है जिसके कारण इसे भारत का हृदयस्थल या मध्य दे ा कहा जाता है। लगभग 1,64,000 वर्ग किमी0 क्षेत्र पर विस्तृत इसका विस्तार 20° 50′ से 30° 17′ उ0 अक्षां ा एवं 73° 3′ से 87° 50′ पू0 दे ाान्तर के मध्य है जिसका ढाल सामान्यतया उत्तर–पि चम से दक्षिण–पूर्व की ओर है। यह क्षेत्र भारत के प्राकृतिक प्रखण्डों में गंगा के मैदानी भागों के रूप में विसतृत है जो वि ाश्टता के आधार पर तीन उप विभागों में बाँटा गया है–(1) ऊपरी गंगा मैदान, (2) मध्यवर्ती गंगा मैदान तथा (3) निचता गंगा मैदान। परन्तु अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत निचला एवं मध्यवर्ती गंगा मैदान को सम्मिलित किया गया है। इन तीनों भू–भागों में खादर, बाँगर, भूड़ तथा तराई क्षेत्र विद्यमान है। जिसका विविध आर्थिक क्रियाकलापों के रूप में महत्व है।

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत उत्तराखण्ड के हरिद्वार, उत्तर प्रदे ा के सहारनपुर, गाजियाबाद, भााहजहाँपुर, लखीमपुर–खीरी, बहराइच, गोण्डा, फैजाबाद, गोरखपुर (सभी जनपद), देवरिया, गाजीपुर, बलिया, मऊ, आजमगढ़, बस्ती, कु ाीनगर, इलाहाबाद, वाराणसी, मिर्जापुर, चन्दौली, तथा बिहार के छपरा, खगड़िया, मुजफ्फरपुर, बरौनी, मधेपुरा, सहरसा, पटना, आरा, बक्सर, भोजपुर इत्यादि जनपद आते हैं। उपजाऊ मिट्टियों के होने के कारण यहाँ गहन निर्वहन कृशि होती है जिससे इस मैदानी क्षेत्र में सघन आबादी एवं अधिवासों के जमघट देखने को मिलते हैं।

, असि0 प्रोफेसर, भूगोल विभाग, आर0एन0सी0 महाविद्यालय, सैदपुर, बलिया (उ0 प्र0) भारत

धरातलीय परिवेश :

इस मैदानी क्षेत्र का धरातल मुख्यतया समतल मैदानी रूप में है। जिसका ढ़ाल प्रायः उत्तर–पि चम से दक्षिण–पूर्व की ओर है। इस मैदान का निर्माण गंगा और उसकी सहायक नदियों यथा– हिमालय से निकलने वाली यमुना, गोमती, घाघरा, गण्डक, कोसी तथा पठारी क्षेत्र से निकलने वाली चम्बल, बेतवा, सोन आदि के जलोढ़ मिट्टी से निर्मित है जिसका जमाव उपरी गंगा वाले मैदान में उत्तर में 8000 मी0 तथा दक्षिण में 1500 मी0, मध्यवर्ती गंगा के मैदानी वाले भाग में 100–150 मी0 की मोटी परत के रूप में विद्यमान है। इस मैदानी क्षेत्र में निक्षेपण के स्वभाव के अनुसार उपजाऊपन पाया जाता है। नदियों द्वारा परित्यक्त मार्ग एवं ताल तथा यत्र–तत्र फैले बालू के धमस यहाँ के धरातल में स्थानीय परिवर्तन ला देते हैं, बिहार का उत्तरी भाग जो कोसी का बाढ़ क्षेत्र है, अपेक्षाकृत अधिक सपाट है। गंगा के उत्तर में सरयूपार मैदान, मिथिला मैदान और कोसी मैदान का विस्तार है, जबकि दक्षिण में गंगा–घाघरा दोआब, गंगा–सोन दोआब और मगध मैदान का विस्तार है।

अपवाह तंत्र :

इस क्षेत्र में गंगा नदी का अपवाह तंत्र विद्यमान है, जिसमें यमुना, गोमती, घाघरा, गंडक, कोसी, कर्मना ा, सोन एवं इसकी सहायक नदियों का सतत् बहाव रहता है। जिसके द्वारा इन दोआब/परिक्षेत्रों के अलावा अन्य क्षेत्रों में सिंचाई की जाती है। नदियों के तल पर अधिक निक्षेप और ऊपरी भागों में अधिक वर्शा के

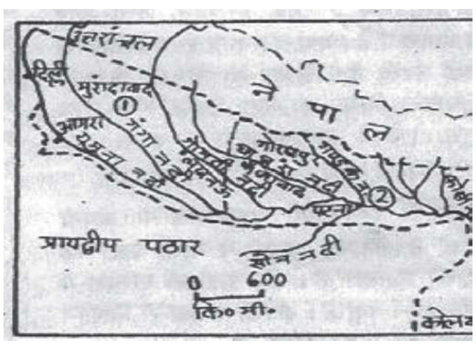

कारण इसमें इनमें प्रति वर्श बाढ़ का पानी फैल जाता है जिससे काफी धन–जन की क्षति होती है। इन नदियों के जलधारा में परिवर्तन भी होता रहता है जिससे गोखुर झील या ताल तथा परित्यक्त धारा यत्र–तत्र बिखरे हुए हैं जो व ा काल में जलप्लसवन करते रहते हैं।

जलवायु एवं मौसम :

सम्पूर्ण गंगा के मैदानी क्षेत्र में सम ीतोश्ण जतवायु का आच्छादन है। जहाँ ग्रीश्म, वर्शा एवं भीत ऋतुएँ विद्यमान हैं। ीत एवं ग्रीश्म काल के मध्य बसन्त ऋतु धरती को विविध रंगों से सवाँरती रहती है जो मनमोहक एवं लुभावना दृ य होता है। यहाँ गीश्म कालीन औसत तापमान लगभग 35°c तथा भीत कालीन औसत तापमान 15°c पाया जाता है। ग्रीश्म काल में 'लू' तथा भीत काल में ठण्ड भरी हवाएँ बहती हैं। यहाँ पर औसत वार्शिक वर्शा 120 सेंमी0 होती है। कम वर्शा वाले क्षेत्रों/समयों में सिंचाई द्वारा कृशि में जलापूर्ति की जाती है।

अर्थव्यवस्था :

समतल मैदान, यातायात के साधनों, भूमिगत जल, जलोढ़ एवं उपजाऊ मिट्टी के कारण इस भाग में सघन जनबसाव एवं ग्रामीण अधिवास की बाहुल्यता व सघनता पायी जाती है। यहाँ का औसत जनघनत्व 600 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 से अधिक है, तथा सिंचाई की उत्तम व्यवस्था के कारण यहाँ कृशि कार्य बड़े पैमाने पर विकसित हैं। जहाँ विविध प्रकार की कृशि फसलें उत्पन्न की जाती हैं। इस क्षेत्र में दोमट मिट्टी की बाहुल्यता के साथ–साथ बलुई, क्षारीय और काँप मिट्टियाँ भी पाई जाती हैं। मिट्टी की अत्यधिक गहराई तथा जीवां ा की विद्यमता के कारण इसकी उर्बरता हमे ा बनी रहती है। यहाँ सम्पूर्ण भूमि का लगभग 70ः कृशि के अन्तर्गत है। इस क्षेत्र की कृशि फसलों में धान, मक्का, गेहूँ, चना, तिलहन और दालों की प्रधानता है। इसके अलावा पटसन, जूट तथा गन्ना प्रमुख मुद्रादायिनी फसलें हैं। इसी कम में फर्रूखाबाद जनपद आलू उत्पादन में वि ोश रूप से अग्रणी एवं सुविख्यात है। जिसके लिए उपयुक्त भौगोलिक द ायें विद्यमान हैं। यहाँ

समय व माँग/आव यकताओं के सापेक्ष व्यवहारिक व स्थायी रूप से उपचारात्मक /निदानात्मक प्रतिश्ठानों व कार्यक्रमों की व्यवस्थाएँ अपेक्षित हैं। जिससे वातावरण एवं स्वास्थ्य के मध्य सामंजस्य स्थायी रूप से स्थापित हो सके। इसी में हमारी एवं हम सभी की भलाई संभव है तथा निकट भविश्य में संभव रहेगी। अतः स्वस्थ मनुश्य, प ु–जानवर, वातावरण, क्षेत्र एवं दे ा हेतु हम सभी के आव यकता है तथा इसे सुनि चत करना स्वयं का उत्तरदायित्व है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1–भारत का भूगोल, चतुर्भुज ममोरिया।
2–भारत का भूगोल, माजिद हुसैन।
3–भारत का भूगोल, अलका गौतम एवं वी0 एस0 चौहान।
4–भारत का प्रादे िक भूगोल, प्रो0 आर0 एल0 सिंह।
5–इंटरनेट सेवा।

*****